डॉ० चन्दा कुमारी
गेस्ट टीचर, हिन्दी विभाग
रोहतास महिला महाविद्यालय, सासाराम रोहतास

10/5/2020 (1)

बी० ए० पार्ट - I , पेपर - II

चित्रलेखा उपन्यास के आधार पर चित्रलेखा का चारित्र चित्रण करें

चित्रलेखा प्रस्तुत उपन्यास की केन्द्रबिंदु है। वह एक साधारण ब्राह्मण परिवार की विधवा नव युवती है जो अपने पारिवारिक संस्कारों में संयमित जीवन यापन करना चाहती है। इसी समय उसके जीवन में कृष्णादित्य का प्रवेश होता है जहाँ से उसका अनंत समुद्र में हिचकोले खाती नाव की तरह बन जाती जाना है। यद्यपि कि वह अपने व्यवसाय के प्रति नर्तकी पूर्णतः प्रतिबद्ध है इसलिये बीजगुप्त से कहती है - "न नहीं मैं व्यक्ति से नहीं मिलती। मैं केवल समुदाय के सामने आती हूँ. व्यक्ति का कोई जीवन में कोई संबन्ध नहीं।"

उपन्यास में चित्रलेखा पाटलिपुत्र की सुंदर नर्तकी के रूप में प्रस्तुत होती है। उसका वैश्यावृत्ति स्वीकार करना उसके व्यक्तित्व से संबंधित असाधारण बात है। उसके कई कारण भी और इनके कारणों का उसके विगत जीवन से गहरा संबंध था। वह विधवा उस समय

हुई थी, जीस सामंत उसकी अवस्था आ त्याकर्षित की थी। विवाह होने के बाद सामंत उसका निधन हो गया था किन्तु ऐसा अधिक दिनों तक नहीं चल सका। एक दिन उसके जीवन में कुमारगिरि ने प्रवेश किया। कुमारगिरि से चित्रलेखा को पुत्र की प्राप्ति हुई, लेकिन पिता व बेटे दोनों ने संसार को छोड़ दिया। उसके बाद एक नर्तकी ने उसे आश्रय देकर नृत्य तथा संगीत कला की शिक्षा दी। फिर नृत्य में वह अद्वितीय बन गई। पाटलिपुत्र का जनसमुदाय चित्रलेखा के पैरों पर लोटा करता था, पर चित्रलेखा ने संयम के तेज से जीवित क्रांति को बनाए रखा लेकिन बीजगुप्त पर मुग्ध होने से वह न बच पाई। इस रूप में चित्रलेखा परिस्थितियों के वशीभूत होकर चलने वाली युवती के रूप में आती है।

इस विलासी और वासनामयी रमणी के साथ चित्रलेखा तेजस्वी और विदुषी भी है। इसका परिचय वह चन्द्रगुप्त की सभा में अपनी तर्कनाशक्ति से कुमारगिरि को पराजित करके देती है। इसी प्रकार कुमारगिरि के आश्रम में जाने पर "प्रकाश पर लुब्ध पतंग का अन्धकार को प्रणाम" कह कर एक दार्शनिक होने का परिचय भी देती है।

चित्रलेखा बीजगुप्त अत्यधिक प्रेम करती थी। परंतु आजिः चल कर वह कुमारगिरि पर भी मोहित हुई। जो कि उसके जीवन की सबसे बड़ी भूल थी। चित्रलेखा बीजगुप्त के भविष्य के लिए

बीजगुप्त का त्याग करके वह कुमारगिरि के पास दीक्षित होने गई, परन्तु कुमारगिरि ने उसे असत्य के जाल में उलझा कर उसका शोषण किया। जब चित्रलेखा को सत्य का ज्ञान हुआ तो वह आक्रान्त दौड़ कर अपने भवन लौट गई। बीजगुप्त के सर्वस्व त्यागने की बात जब चित्रलेखा को ज्ञात हुई तो वह बीजगुप्त से क्षमा मांगने लगी। बीजगुप्त ने उसे क्षमा किया और दोनों ने अपनी धन संपत्ति त्याग कर पाटलिपुत्र से प्रस्थान किया। इस पूरे उपन्यास में चित्रलेखा एक रूपगर्विता उन्मादिनी विलासी स्त्री के रूप में दिखाई देती है जो सदा ही पुरुष को अपनी वासना का शिकार बनाना चाहती है। वह अपने व्यक्तित्व से इस उपन्यास के लगभग सभी पुरुष पात्रों को प्रभावित करती है। इतना ही नहीं बीजगुप्त का यशोधरा से विवाह करके और वंशवृद्धि के लिये प्रेरित करके वह अपने त्याग वृत्ति का परिचय भी देती है। इस प्रकार लेखक ने एक प्रेमिका को पत्नी का स्थान दिलाकर चित्रलेखा के रूप में प्रेम और वासना के भेद को स्पष्ट कर दिया है। जहाँ प्रेम स्थाई है। उसमें सम्पूर्ण समर्पण है। वहीं वासना क्षणिक है। अस्थाई है अतः यही वासना चित्रलेखा की कमजोरी है। इसी कमजोरी के कारण वह कुमारगिरि के जाल में बहुत जल्दी उलझ जाती है और जब तक उसे होश आता है तब तक सब कुछ समाप्त हो जाता है। चाहकर भी वह अपने प्रेमी बीजगुप्त को अपने

मेघन के नहीं रोक पाती है और उसे भी बीमारुष के साथ ही सब कुछ खोना पड़ता है। उपन्यास के अंत में अपनी खोयी शक्ति के कारण चित्रलेखा ~~अस्थिर~~ चित्त अपनी सम्पूर्ण दुर्बलता के बाद भी पाठको की सहानुभूति प्राप्त कर लेती है। इसलिए अंत में यह कहना उचित होगा कि चित्रलेखा स्थिर चित्त नहीं है। उसने अपने जीवन में विराग सम्हालने की बात सोची लेकिन कुमारगिरि के आते ही उसका विचार बदल गया। और उसे अपने जीवन में स्वीकार कर लिया। एक नर्तकी के रूप में बीजगुप्त को उसने पहले तो समुदाय के सामने ही मैं आती हूँ कह कर अस्वीकार किया लेकिन बाद में उसी से प्रेम करने लगी। यहाँ तक की अपने मनोरंजन के लिए वह श्वेतांक को भी आकर्षित करती है। बाद में उसी से कहती है कि मैं संसार में एक मनुष्य से प्रेम करती हूँ और बीजगुप्त है। लेकिन कुछ समय बाद ही वह कुमारगिरि से प्रेम करने लगती है। विचारो की इस अस्थिरता उसके जीवन को और साथ ही बीजगुप्त के जीवन को अंत में भिखारी की स्थिति में पहुँचा देती है।